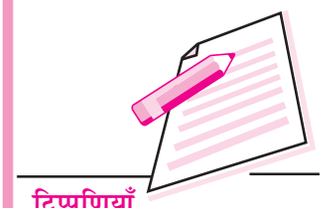

13

एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं

अर्थशास्त्र का संबंध मनुष्य के उस निर्णयों से जो वह अपने संसाधनों के सीमित होने के कारण लेता है। यह निर्णय उत्पादन, उपभोग, बचत तथा निवेश की क्रियाओं से संबंधित हैं। सीमित साधनों और अनंत आवश्यकता के कारण मनुष्य का निर्णय लेना इतना सरल और आसान नहीं है। फिर भी उसे अपनी आवश्कयताओं और संसाधनों की उपलब्धता का अनुमान कर वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन करना होता है। इसी प्रकार समाज में उत्पादित वस्तुओं का वितरण उचित तरीके से होना चाहिए। अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं इसीलिए उत्पादन, उपभोग और वितरण से संबंधित हैं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- आर्थिक समस्याओं के कारणों की व्याख्या कर पाएंगे;
- केन्द्रीय समस्याओं : 'क्या उत्पादन किया जाए', 'किस प्रकार उत्पादन किया जाए' और 'किसके लिए उत्पादन किया जाए' को चिन्हित कर पाएंगे;
- उत्पादन संभावना वक्र की अवधारणा को समझ पाएंगे;
- अवसर लागत और सीमांत अवसर लागत की अवधारणा से परिचित हो पाएंगे; तथा
- उत्पादन संभावना वक्र का प्रयोग कर अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं की व्याख्या कर पाएंगे।

13.1 आर्थिक समस्याएं क्यों उत्पन्न होती हैं?

प्रत्येक अर्थव्यवस्था में आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं, क्योंकि–

(क) आवश्यकताएं असीमित हैं

(ख) साधन सीमित हैं

(ग) साधनों का वैकल्पिक प्रयोग

टिप्पणियाँ

(क) असीमित आवश्यकताएं

मनुष्य को अपने जीवित रहने के लिए अपनी मौलिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करना अति आवश्यक है। उदाहरणत: मनुष्य को भोजन, पानी, वस्त्र और आवास आदि जीवित रहने के लिए जरूरी हैं। यही जरूरतें उसकी मूलभूत आवश्यकताएं हैं। यदि मनुष्य को जीवन का उच्च स्तर पाना है तो मात्र भोजन, जल, वस्त्र और आवास की संतुष्टि से वह शांत नहीं बैठता है। स्वभाव से वह जीवित रहने की आवश्यकताओं से भी कुछ अधिक पाने के लिए लालायित रहता है। यह उसकी आदत में शामिल है। वह एक आवश्यकता की पूर्ति एवं संतुष्टि करता है तो अन्य दूसरी अनेक आवश्यकताएं सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। यह सिलसिला सीमा विहीन रहता है, जो यह प्रमाणित करता है कि आवश्यकताएं असीमित हैं।

आइए, एक उदाहरण द्वारा इस तथ्य को समझें। माना नेहा कुछ भोजन, एक ब्लाउज, अपनी मां के लिए रसोई के बर्तन, भाई के लिए मिठाई और छोटी बहन के लिए चूड़ियां क्रय करना चाहती हैं। नेहा द्वारा क्रय करने की अन्य वस्तुओं में से ये कतिपय वस्तुएं हैं, जो वह अधिक धन होने पर खरीद सकती है। उसके पास क्रय के लिए पैसे कम हैं। अत: वह अपनी इच्छानुसार क्रय करने में असमर्थ है। अत: यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि आवश्यकताएं असीमित हैं।

(ख) सीमित साधन

हम कह सकते हैं कि उपरोक्त उदाहरण में उल्लेखित वस्तुएं कुछ मूल्य चुकाकर प्राप्त की जा सकती हैं। हम कल्पना करते हैं कि नेहा के पास केवल रुपये 1000 हैं, जिन्हें व्यय किया जा सकता है। किंतु इन कम रुपयों में निश्चित है कि वह अपनी सारी इच्छित वस्तुएं क्रय नहीं कर पाएगी। भोजन मिलता है रुपये 150 में, ब्लाउज का मूल्य है 200 रुपये, बर्तन का मूल्य रुपये 600, मिठाई के डिब्बे की कीमत है रुपये 200 तथा चूड़ियों के सैट का मल्य है रुपये 50। यदि इन सभी वस्तुओं को नेहा एक साथ क्रय करें तो उसे रुपये 1200 व्यय करने होंगे, जबकि उसके पास मात्र रुपये 1000 ही हैं। अत: अब नेहा को अपनी खरीदारी को अपने साधनों के अनुसार (रुपये 1000) समायोजित करना पड़ेगा। रुपये 1200 के सामने उसके साधन (रुपये 1000) सीमित रह गए हैं। इस तरह हर व्यक्ति की आय कम या अधिक हो सकती है, पर असीमित नहीं। अत: लोगों के पास उपलब्ध साधन अथवा आय सीमित अथवा् दुर्लभ होती है।

साधनों में भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यम शामिल हैं। विश्व में इन साधनों की प्रचुरता नहीं है। ये दुर्लभ हैं, जिसका अर्थ स्पष्ट है कि इन साधनों की मांग उनकी उपलब्ध मात्रा से कहीं अधिक हैं।

(ग) साधनों का वैकल्पिक प्रयोग

उपरोक्त उदाहरण से एक और महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है, कि एक साधन का अनेक प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है।

नेहा अपने सीमित साधन (1000 रुपये) से अनेक विभिन्न वस्तुओं में से अपनी इच्छित कोई भी वस्तु खरीद सकती है, किंतु एक बार किसी वस्तु की खरीदारी का निर्णय (मां के लिए बर्तन) करने के बाद वह अन्य कोई वस्तु नहीं खरीद पाएगी, क्योंकि उसके साधन (मात्र रुपये 1000) का एक भाग (रुपये 600) एक ही साधन के क्रय पर व्यय हो जाता है। शेष रुपये 400 को वह ब्लाउज तथा मिठाई पर व्यय कर देती है। अन्य वस्तुएं कैसे क्रय करें। उसे अपने साधनों का वैकल्पिक प्रयोग तलाशना पड़ेगा।

उदाहरण के लिए, एक भूखंड पर आप कृषि कार्य कर सकते हैं, कोई कारखाना लगा सकते हैं, विद्यालय खड़ा कर सकते हैं या कोई अस्पताल खोल सकते हैं। इसी प्रकार, एक श्रमिक खेत जोतने, टोकरी बनाने अथवा सब्जी बेचने में उपयोग किया जा सकता है। अत: हम देखते हैं कि साधनों के वैकल्पिक प्रयोग हैं।

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट होता है कि आवश्यकताएं तो असीमित हैं, उनकी संतुष्टि के लिए साधन सीमित हैं। यह सभी अर्थव्यवस्थाओं के समक्ष सबसे मूलभूत समस्या है। हमने साधनों के वैकल्कि प्रयोग की चर्चा भी की है। चाहे कोई अर्थव्यवस्था गरीब हो या अमीर, विकसित हो या अविकसित–यह मूल समस्या सभी अर्थव्यवस्थाओं में विद्यमान है।

साधनों की सीमितता ही हमें चयन करने को विवश करती है। नेहा के पास मात्र रुपये 1000 हैं। वह अनेक वस्तुएं क्रय करने को इच्छुक है, उनमें से उसे अपनी इच्छित वस्तु का चयन करना होगा। उसे यह चुनना होगा कि वह अपनी किन इच्छाओं की संतुष्टि करे। प्रत्येक उपभोक्ता को इस समस्या से दो-चार होना पड़ता है। इसी प्रकार उत्पाद को भी इस समस्या का सामना करना पड़ता है और यह तय करना पड़ता है कि अपने दुर्लभ साधनों को किस उपयोग में लाए।

कल्पना कीजिए, साधन सीमित न होते तो क्या फिर भी ये आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होती? उत्तर यही है कि यदि साधन दुर्लभ नहीं होते तो फिर सभी आवश्यकताओं की संतुष्टि में उनका प्रयोग संभव हो जाता। इस प्रकार, दुर्लभता तथा चयन की समस्या उत्पन्न ही न होगी। दुर्लभता ही व्यक्तियों को अपने सीमित साधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए विवश करती है। साधनों के सर्वश्रेष्ठ उपयोग को ही साधनों की मितव्यतता कहा जाता है, जिसका अर्थ साधनों का इस प्रकार न्याय संगत प्रयोग है, जिससे सीमित साधनों से अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

पाठगत प्रश्न 13.1

बताइए, निम्न कथन सत्य हैं या असत्य–

1. साधन दुर्लभ हैं।
2. आवश्यकताएं सीमित हैं।
3. दुर्लभता चयन को उत्पन्न नहीं करती।
4. साधनों का वैकल्पिक प्रयोग होता है।
5. प्रत्येक अर्थव्यवस्था को मूल आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता।
6. साधनों की मितव्यतता का अर्थ साधनों में (कृपणता) कंजूसी से है।
7. भूमि उत्पादन का एक साधन है।
8. मानवीय आवश्यकताएं असीमित हैं।
9. यदि मांग उनकी उपलब्धता से कम हो तो साधन दुर्लभ होंगे।
10. केवल उत्पादक को ही आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

13.2 अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं

जैसा कि हम पहले पढ़ चुके हैं कि विश्व की सभी अर्थव्यवस्थाओं को अनंत आवश्यकताओं और दुर्लभ साधनों की आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है। यह आर्थिक समस्या ही लोगों को सीमित साधनों के प्रयोग के विषय में चयन करने पर विचार करने को विवश करती हैं। यही आर्थिक समस्या अर्थव्यवस्थाा की केन्द्रीय समस्याओं की जननी है। यह समस्याएं निम्नवत हैं–

- क्या और किस मात्रा में उत्पन्न करें?
- कैसे उत्पादन करें?
- किसके लिए उत्पादन किया जाए?

सामूहिक रूप में इन्हीं केन्द्रीय समस्याओं को 'संसाधन आबंटन की समस्या' का नाम दिया जाता है।

(क) क्या और किस मात्रा में उत्पादित किया जाए?

साधनों की सीमितता ही 'क्या और कितना उत्पन्न' करने की समस्या को जन्म देती है। एक उत्पादक को यह तय करना होता है कि उत्पादन के लिए उपलब्ध साधनों को किस प्रकार उपयोग में लाया जाए। उदाहरण के लिए, लता एक कृषक है। उसके पास एक भूखंड है। उसे यह तो सोचना ही पड़ेगा कि उस भूखंड पर कौन-सी फसल उगाए। माना वह गेहूं और गन्ना उगा सकती है, पर उसके पास उपलब्ध भूमि तो सीमित है। अब उसे यह तय करना होगा कि वह गेहूं उगाए या गन्ना या फिर दोनों। गेहूं या गन्ना का निर्णय करने के बाद ही वह यह निश्चित कर पाएगी कि अपनी चयनित फसल को कितनी मात्रा में उगाए? उदाहरण के लिए, 10, 20 या 50 क्विंटल। क्या और कितना उत्पादन की यह समस्या प्रत्येक अर्थव्यवस्था को सुलझानी होती है। यह भी तय करना होता है कि साधनों का प्रयोग उपभोक्ता वस्तुएं बनाने के लिए करे या उत्पादक वस्तुएं या फिर वैकल्पिक रूप में, विलासिता वस्तुओं का निर्माण किया जाए अथवा जन- साधारण के लिए उपयोगी वस्तुओं का। किसी अर्थव्यवस्था को सैन्य सामग्री एवं नागरिक उपभोग सामग्री के उत्पादन के बीच भी चयन करना पड़ सकता है। दूसरे शब्दों में, सीमित साधनों के कारण अर्थव्यवस्थाओं को उन संयोजनों के बीच चयन करना पड़ता है, जिनका उन्हें उत्पादन करना होता है।

ये क्या और कितने उत्पादन की समस्या सरकार द्वारा उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों के आवंटन से सुलझाई जाती है अथवा बाजार में वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतों तथा जन सामान्य की वरीयताओं के आधार पर भी इस समस्या का समाधान हो सकता है।

(ख) कैसे उत्पादन किया जाए?

उत्पादन की तकनीक का चयन 'कैसे उत्पादन किया जाए' की समस्या से जुड़ा है। उत्पादन की तकनीक का अर्थ किसी वस्तु के उत्पादन में उत्पादन के कारकों के विभिन्न संयोग से है। प्राय: सभी वस्तुओं का एक से अधिक तकनीकों द्वारा उत्पादन संभव है। प्रत्येक उत्पादन

विधि में कारकों के भिन्न-भिन्न संयोगों की आवश्यकता होती है। उत्पादन की तकनीक श्रम या पूंजी प्रधान हो सकती है। जिस तकनीक में पूंजी की इकाइयों की तुलना में श्रम का अधिक प्रयोग हो, उसे हम श्रम प्रधान तकनीक कहते हैं। दूसरी ओर, अपेक्षाकृत अधिक पूंजी का प्रयोग करने वाली तकनीक पूंजी सघन या पूंजी प्रधान तकनीक कहलाती है।

आइए, इस विचार को कुछ उदाहरणों द्वारा समझें। लता अपने खेत में श्रम और पूंजी के अनेक संयोजनों का प्रयोग कर सकती है। यदि वह इच्छुक हो तो हल चलाने, बीज बोने, फसल काटने, गेहूं निकालने (Threshing) के कामों में बैलों और श्रमिकों का प्रयोग कर सकती है। यह श्रम प्रधाान तकनीक होगी। दूसरी ओर वह इन्हीं कामों को मशीनों द्वारा भी संपन्न कर सकती है। इस दशा में वह कृषि की पूंजी प्रधान तकनीक उपयोग कर रही है। ठीक इसी प्रकार कपड़ा बनाने के उद्योग में हथकरघा का प्रयोग एक श्रम प्रधान तकनीक है तो विद्युत चालित करघा का प्रयोग पूंजी प्रधान तकनीक कहलाएगा। 'कैसे' उत्पादन की समस्या का समाधान का आधार है कि किस साधन के किस स्तर तक उपयोग द्वारा उत्पादन करना है। प्रत्येक उत्पादक उपलब्ध साधनों से अधिकतम उत्पादन करना चाहता है।

(ग) किसके लिए उत्पादन किया जाए?

इस समस्या का संबंध उत्पादन का किस प्रकार विभिन्न व्यक्तियों के बीच विभाजन किए जाने से है। प्राय: व्यक्तियों को उनके द्वारा उत्पादित वस्तुएं श्रमिक के रूप में नहीं दी जाती। उत्पादन के विक्रय से मुद्रा अर्जित की जाती है। उत्पादक वही मुद्रा राशि उत्पादन प्रक्रिया में योगदान देने वालों के बीच आय के रूप में भुगतान कर देते हैं। व्यक्ति इस प्रकार, प्राप्त आय को व्यय कर अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुएं खरीदते हैं। अत: किसके लिए उत्पादन का अर्थ होगा कि किस उत्पादन के साधन को कितना प्रतिफल अथवा पारिश्रमिक दिया जाए। हमारे उदाहरण में, लता फसल की कटाई-दराई के बाद अनाज को बेचकर विभिन्न साधनों को उनकी सेवाओं के प्रतिफल का भुगतान करेगी। श्रमिक की मजदूरी, भूमि को लगान और पूंजी पर ब्याज दिया जाएगा। शेष बची राशि लता को उद्यमी के रूप से अर्जित लाभ होगी। किसी व्यवसाय को प्रारंभ करने का जोखिम उठाने वाला व्यक्ति उद्यमी कहलाता है।

पाठगत प्रश्न 13.2

सही उत्तर चुनिए–

1. कैसे उत्पादन किया जाए की समस्या का संबंध है–

   (क) आय के वितरण से

   (ख) उत्पादन की तकनीक से

   (ग) उत्पादन हेतु वस्तुओं के चयन से

   (घ) उत्पादन की मात्रा के चयन से

टिप्पणियाँ

2. 'क्या उत्पादन करें' की समस्या का समाधान होता है–

   (क) जनता की प्राथमिकताओं से

   (ख) बाजार कीमतों से

   (ग) सरकारी द्वारा साधन आबंटन से

   (घ) उपरोक्त सभी से

3. उत्पादन प्रक्रिया में श्रम द्वारा अर्जित आय इस समस्या का अंग होती है–

   (क) क्या और कितना उत्पादन करें

   (ख) कैसे उत्पादन करें

   (ग) किसके लिए उत्पादन करें

   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. उत्पादन की श्रम प्रधान तकनीक का अर्थ है–

   (क) उत्पादन में केवल श्रम का प्रयोग

   (ख) उत्पादन इकाई पर श्रम का स्वामित्व

   (ग) आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन की तकनीक

   (घ) वस्तुओं के उत्पादन में पूंजी की अपेक्षा श्रम का अधिक प्रयोग

5. अर्थव्यवस्था के समक्ष केन्द्रीय समस्याओं का संबंध है–

   (क) साधनों के आबंटन से

   (ख) 'क्या उत्पादन करें' से

   (ग) 'कैसे उत्पादन करें' से

   (घ) 'किसके लिए उत्पादन करें' से

13.3 अर्थव्यवस्था की अन्य केन्द्रीय समस्याएं

इसके पूर्व वर्णित केन्द्रीय समस्याओं के अतिरिक्त प्रत्येक अर्थव्यवस्था को अन्य दो समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे हैं–

(क) संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग की समस्या

(ख) संसाधन संवृद्धि की समस्या।

आइए, इनके संबंध में विस्तार से चर्चा करें–

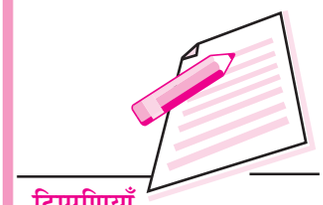

(क) संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग

बताया जा चुका है कि साधन दुर्लभ हैं, उनका अल्प उपयोग नहीं करना चाहिए। उनका उचित प्रकार उपयोग कर उनसे अधिकतम उत्पादन करना चाहिए। इस प्रकार संसाधनों के पूर्ण प्रयोग के निम्न निहितार्थ हैं–

(i) सभी संसाधनों का उपयोग हो और

(ii) संसाधनों का दक्षतापूर्ण उपयोग हो।

आगे, हम इन्हीं बातों का विस्तार से वर्णन करते हैं–

(i) सभी संसाधनों का उपयोग

संसाधनों का यों ही पड़ें रखना उन्हें बरबाद करने के समान हैं। संसाधनों की बर्बादी से उत्पादन कम हो जाता है। उदाहरण के लिए, मान लो कि बहुत से व्यक्ति बेरोजगार हैं। इसका अर्थ है कि मानवीय संसाधनों की बरबादी हो रही है। यदि किसी कारखाने में हड़ताल हो जाए तो वहां लगी पूंजी भी बर्बाद हो जाती है। यदि इन संसाधनों का प्रयोग हो तो अर्थव्यवस्था में अपेक्षाकृत अधिक उत्पादन होगा। अत: प्रत्येक अर्थव्यवस्था को ऐसे प्रयास करने चाहिए कि उनके दुर्लभ संसाधनों का पूर्ण उपयोग हो, वे खाली न रहें, बेरोजगार न रहें।

(ii) साधनों का दक्षता पूर्ण प्रयोग

चूंकि साधन दुर्लभ हैं, अत: उनकी समस्त क्षमता का पूरा प्रयोग होना चाहिए। उनकी उत्पादन क्षमता के प्रयोग में कोई कमी न रहनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति की क्षमता 8 घंटे कार्य करने की है, किंतु उसे केवल 4 घंटे का ही काम मिलता है तो ये उस व्यक्ति की क्षमता का अपूर्ण उपयोग ही कहलाएगा। यदि उसे पूरे 8 घंटे का काम मिलता तो उत्पादन में भी वृद्धि होती।

संसाधनों की क्षमता के प्रयोग में कमी रहना भी उनकी बरबादी के समान है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था को ऐसी उत्पादन विधियां अपनानी चाहिए कि सभी संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग संभव हो पाए।

(ख) संसाधन संवृद्धि

इस अध्याय के शुरू में हम पढ़ चुके हैं कि आवश्यकताएं असीमित होती हैं। अत: लोग नित निरंतर अधिक-से-अधिक वस्तुओं की मांग करते रहते हैं। परंतु इन बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए तो संसाधनों की मात्रा में भी निरंतर वृद्धि होनी चाहिए। तभी वे बढ़ती मांगों को पूरा कर पाएंगे। सोचना है, कि अर्थ व्यवस्था में संसाधनों की वृद्धि कैसे हो? साधनों में वृद्धि हो सकती है, यदि–

(i) संसाधनों में परिमाणात्मक परिवर्तन हो

साधनों में परिमाणात्मक तभी होंगे, जब उपलब्ध संसाधनों की मात्रा में वृद्धि हो। उदाहरण के लिए, जनसंख्या वृद्धि से मानवीय पूंजी की मात्रा में वृद्धि होती है। इसी प्रकार प्राकृतिक संसाधनों के नवीन भंडारों की खोज से भी हमें अधिक मात्रा में संसाधनों की प्राप्ति हो जाती है।

(ii) संसाधनों में गुणात्मक सुधार

उत्तम प्रशिक्षण और कौशल विकास से मानवीय पूंजी की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता में सुधार होता है। मानव निर्मित पूंजी की गुणवत्ता में सुधार प्राय: प्रौद्योगिकी के विकास के माध्यम से होता है। यहां संसाधनों के परिमाण में वृद्धि नहीं होती, किंतु उनकी उत्पादकता में वृद्धि हो जाती है। उत्पादकता को हम आगत की प्रति इकाई से प्राप्त निर्गत के रूप में परिभाषित करते हैं। उदाहरण, उचित प्रशिक्षण द्वारा पहले 10 इकाई उत्पन्न करने वाला श्रमिक 15 इकाइयां उत्पादन करने में सक्षम हो जाएगा। यहां श्रमिक संख्या तो वही रहती है, पर उत्पादन 5 इकाइयां और अधिक हो जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि अच्छे प्रशिक्षण और कौशल वृद्धि के आधार पर उत्पादन वृद्धि संपन्न हुई है।

निष्कर्ष के रूप में, हम कह सकते हैं कि संसाधन संवृद्धि उस समय होती है, जब या तो संसाधनों की भौतिक मात्रा में वृद्धि हो जाए या फिर प्रौद्योगिकी में सुधार के कारण उनकी गुणवत्ता में सुधार हो जाएं।

पाठगत प्रश्न 13.3

ठीक उत्तर को चुनिए–

1. संसाधनों के अल्प प्रयोग का अर्थ है कि उनका ..... प्रयोग हो रहा है। (दक्षतापूर्वक/ अदक्षतापूर्वक)
2. प्रौद्योगिकीय ..... से संसाधन संवृद्धि होती है। (पिछड़ेपन/ सुधार)
3. संसाधनों को ..... प्रयोग में रहना चाहिए। (निष्क्रिय/ पूर्ण)
4. यदि कोई व्यक्ति ..... है तो इसका अर्थ है कि उस साधन की बरबादी हो रही है। (रोजगाररत/ बेरोजगार)
5. संसाधनों में परिमाणात्मक परिवर्तन का अर्थ है .....। (श्रम की उपलब्धता में वृद्धि/ श्रमिकों की बेहतर योग्यता व प्रशिक्षण)

13.4 उत्पादन संभावना की अवधारणा

विभिन्न संभव विकल्पों में एक अर्थव्यवस्था यह निर्णय लेती हैं कि क्या, कितना और कैसे उत्पादन करे और संसाधनों का आवंटन कैसे किया जाए। मान लीजिए कि एक अर्थव्यवस्था केवल दो वस्तुएं–चावल और बाइसिकिल का उत्पादन करती है। उसके पास सीमित साधन हैं। यदि सभी संसाधनों का प्रयोग करके वह 20 क्विंटल चावल का उत्पादन कर पाती है तो साइकिल का कोई उत्पादन नहीं हो पाएगा। यदि अधिक-से-अधिक साधन साइकिल उत्पादन में लगा दिए जाते हैं, शेष कुछ साधन ही चावल उत्पादन में संलग्न किए जाएंगे। इसी प्रकार, यदि सभी संसाधनों का प्रयोग साइकिल उत्पादन में किया जाए तो 150 साइकिलें उत्पादन होंगी। कोई भी साधन चावल के उत्पादन में नहीं लगाया जाएगा। इस प्रकार सीमित साधनों को वैकल्पिक उत्पादन संभावनाएं प्राप्त करने के लिए विभिन्न संयोगों में लगाया जाता है, जिसे संभावना वक्र से दर्शाया जाता है।

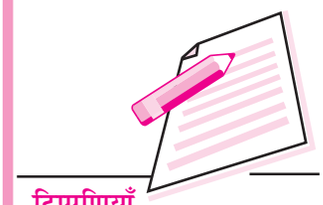

उत्पादन संभावना वक्र वह वक्र है, जो दिए हुए संसाधनों तथा तकनीक के आधार पर दो वस्तुओं के उत्पादन की वैकल्पिक संभावनाओं को प्रकट करता है। इस पर दो वस्तुओं के विभिन्न संयोग प्रदर्शित होते हैं। उत्पादन संभावना वक्र वह ग्रॉफिक प्रदर्शन है, जिस पर केन्द्रीय समस्या 'क्या उत्पादन किया जाए' को प्रदर्शित किया जाता है। वक्र, प्राप्त किए जाने वाले विकल्पों को दिखाता है। क्या प्राप्त किया जा सकता है, यह निम्न मान्यताओं पर आधारित है–

- उपलब्ध साधन निश्चित/ स्थिर हैं।
- तकनीकी अपरिवर्तित रहती है
- सभी साधनों पूर्णतया रोजगाररत हैं
- साधनों का कुशलतापूर्वक लगा होना

उत्पादन में लगे सभी साधन सभी वस्तुओं के उत्पादन में दक्ष नहीं होते, इसीलिए यदि उन्हें एक उत्पादन से दूसरे उत्पादन में प्रेषित कर दिया जाता है तो इससे उत्पादन लागत बढ़ सकती है।

13.5 उत्पादन संभावना तालिका

माना कि किसी अर्थव्यवस्था में केवल दो वस्तुओं का उत्पादन होता है, ये दो वस्तुएं हैं–बंदूक और मक्खन। यह उदाहरण प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सेम्यूलसन ने दिया है, जिसने 1969 में अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया था। उसने युद्ध सामग्री और नागरिक उपभोग की वस्तुओं यथा बंदूक और मक्खन, का उदाहरण दिया। दोनों वस्तुओं के उत्पादन के मध्य विभिन्न संयोगों को दर्शाते हुए एक तालिका बनाई जा सकती है। यदि सभी साधनों को बंदूक निर्माण में संलग्न किया जाता है तो 15 इकाई बंदूक का प्रतिवर्ष उत्पादन होता है, जो साधनों का अधिकतम उपयोग है। बंदूक निर्माण से हटाकर साधनों को यदि मक्खन उत्पादन में लगाया जाता तो 5 इकाई मक्खन उत्पन्न होता है। अब सोचना पड़ता है कि साधनों को अंशत: या पूर्णत: किसके उत्पादन में संलग्न किया जाए, जिससे अधिकतम लाभ तथा साधनों का सर्वोत्तम प्रयोग हो सके। इसके लिए एक तालिका बनाई जा सकती है। मान लीजिए यह तालिका निम्नवत है–

संभावना	बंदूक (इकाई)	मक्खन (इकाई)	MRT
A	15	0	–
B	14	1	4
C	12	2	2
D	9	3	3
E	5	4	4
F	0	5	5

13.6 उत्पादन संभावना वक्र/ सीमा

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं की व्याख्या उत्पादन संभावना तालिका (PPS) या उत्पादन संभावना वक्र (PPC) द्वारा की है। PPS दिए गए संसाधनों एवं उत्पादन तकनीक के साथ दो वस्तुओं के समूहों की वैकल्पिक उत्पादन संभावनाओं को दर्शाता है। PPC इस तालिका (PPS) का ग्राफिक प्रदर्शन है। PPS को उत्पादन संभावना सीमा (PPF) भी कहा जाता है और वक्र को रूपांतरण वक्र (Transformation Curve) का नाम भी दिया जाता है। दिए गए उदाहरण में यदि मक्खन के उत्पादन को अधिक बढ़ाना है तो बंदूक के उत्पादन में लगे साधनों को भी मक्खन उत्पादन में लगाना होता है–

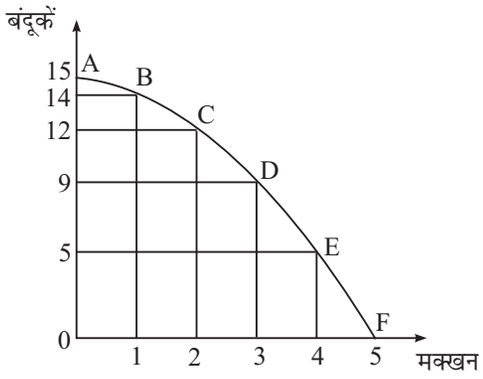

चित्र 13.1

चित्र 13.1 में AF वक्र PPC है। जैसा कि उपरोक्त रेखाचित्र में दिखाया गया है, जब सभी साधनों को बंदूक उत्पादन में लगा दिया गया तो बंदूक की 15 इकाइयों का उत्पादन होता है और मक्खन का उत्पादन शून्य। यदि कुछ साधनों को मक्खन उत्पादन के लिए रूपांतरण किया जाता है तो उसका उत्पादन शून्य से बढ़कर 1 इकाई हो जाता है और बंदूक का उत्पादन गिरकर 15 से 14 इकाई हो जाता है। अंत में, सभी साधनों को मक्खन उत्पादन में रूपांतरण कर दिया जाता है तो वक्र बिंदु F पर पहुंच जाता है, मक्खन का 5 इकाइयों का उत्पादन होता है, मगर बंदूक का उत्पादन शून्य हो जाता है। इस प्रकार ABCDEF का बिंदु पथ PPC को व्यक्त करता है।

इस तरह एक अर्थव्यवस्था में एक वस्तु के उत्पादन से साधनों को दूसरी वस्तु के उत्पादन हेतु रूपांतरण कर दिया जाता है। PPC की दो विशेषताएं हैं–

(i) PPC का नीचे की ओर ढलान वाला होता है, जिसका अर्थ है कि किसी वस्तु के उत्पादन को बढ़ाने के लिए हमें पहली वस्तु के उत्पादन की कुछ इकाइयों का त्याग करना पड़ता है।

(ii) PPC उद्गम बिंदु के अवतल होता है। आपने देखा कि मक्खन की कुछ इकाइयों के उत्पादन के लिए बंदूक की कुछ उत्पादन इकाइयों का त्याग किया गया है। एक वस्तु

से उत्पादक साधनों को कम कर दूसरी वस्तु के उत्पादन में वृद्धि की जाती है। इस तरह साधनों की रूपांतरण सीमांत दर (Marginal Rate of Transformation MRT) बढ़ती जाती है और अंत में वह उस बिंदु पर पहुंचता है, जहां दूसरी वस्तु के उत्पादन से लाभ मिलने लगता है।

MRT, PPC में होने वाले परिवर्तन की दर को मापता है और उसके ढाल की माप करता है। चित्र 13.1 में हमने देखा, जब हम मक्खन की एक इकाई की वृद्धि करते हैं, बंदूक उत्पादन की कई इकाइयों को घटाना पड़ता है। इस प्रकार वक्र पर MRT बढ़ जाती है।

यहां $$\text{MRT मक्खन में} = \frac{\text{बन्दूकों में परिवर्तन}}{\text{एक इकाई परिवर्तन}}$$

वक्र निम्न मान्यताओं पर आधारित है–

(i) उत्पादक घटकों की मात्रा स्थिर होती है

(ii) पूर्ण रोजगार

(iii) तकनीक अपरिवर्तित रहती है

(iv) अर्थव्यवस्था में दो वस्तुओं का उत्पादन होता है

जब रूपांतर रेखा की सीमांत दर दोनों वस्तुओं में समान रहे या उत्पादन स्थिर प्रतिफल के नियम के अंतर्गत हो रहा हो तो PPC एक सरल रेखा होती है। उत्पादन संभावना वक्र का ढलान ऊपर से नीचे की ओर बायें से दायें होता है। इसका कारण यह है कि उपलब्ध साधनों के अधिक उपयोग की स्थिति में दोनों वस्तुओं के उत्पादन को एक साथ नहीं बढ़ाया जा सकता। वस्तु X का उत्पादन तभी अधिक किया जा सकता है, जब दूसरी वस्तु Y का उत्पादन कम किया जाए। इसका कारण यह है कि X वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए Y वस्तु की पहले की तुलना में अधिक इकाइयों का त्याग करना पड़ेगा। X वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने की अवसर लागत Y वस्तु के उत्पादन में होने वाली हानि के रूप में बढ़ने की प्रवृत्ति होती है। आर्थिक विकास की स्थिति का विश्लेषण PPC के खिसकने पर किया जा सकता है, जो पूंजी स्टॉक की वृद्धि, निवेशों में परिवर्तन और तकनीकी सुधार आदि से परिलक्षित होता है।

पाठगत प्रश्न 13.4

क्या निम्न कथन सत्य/ असत्य हैं–

1. PPC पर कोई बिंदु इस बात का द्योतक है कि साधनों को पूर्ण उपयोग हो रहा है।
2. PPC के अंदर का बिंदु व्यक्त करता है कि अर्थव्यवस्था में अल्प रोजगार विद्यमान है।
3. PPC इस मान्यता पर खींचा जाता है कि अर्थव्यवस्था में संसाधनों का विकास हो रहा है।

13.7 संसाधनों का अल्प अथवा अकुशल प्रयोग

हमने ऊपर देखा है कि उत्पादन संभावना वक्र पर कोई बिंदु संसाधनों का पूर्ण तथा कुशलतापूर्वक प्रयोग का प्रतिनिधित्व करता है। यदि, अर्थव्यवस्था उत्पादन संभावना वक्र के अंदर किसी बिंदु पर कार्य करती है तो इससे प्रदर्शित होता है कि संसाधनों का अल्प अथवा अकुशल प्रयोग हो रहा है।

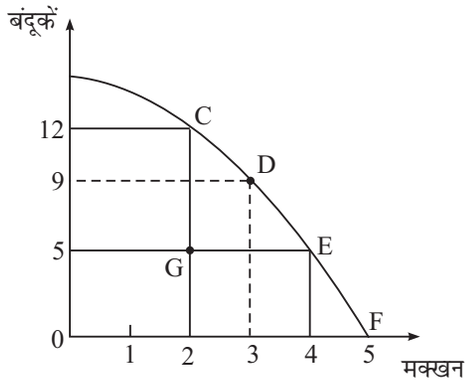

रेखाचित्र 13.2: संसाधनों का अल्प या अकुशल प्रयोग

आइए, हम तथ्य को रेखाचित्र 13.2 की सहायता से समझें। चित्र में हम देखते हैं कि बिंदु G पर अर्थव्यवस्था में दो इकाई मक्खन और 5 इकाइयां बंदूक का उत्पादन होता है। संसाधनों के पुनः आवंटन से अर्थव्यवस्था निम्नलिखित में से किसी एक को कर सकती हैं–

(क) बंदूक का उत्पादन बढ़ाकर 12 इकाइयां कर दें, पर मक्खन का उत्पादन पहले ही स्तर 2 इकाई पर बनाए रखें, जैसा कि ऊपर PPC पर बिंदु C दिखा रहा है।

(ख) मक्खन का उत्पादन बढ़ाकर 4 इकाई कर दे, पर बंदूक का उत्पादन पहले जैसा 5 इकाइयां रहे। चित्र में E जो PPC पर है, यही प्रदर्शित कर रहा है।

उपरोक्त दोनों स्थितियों 'क' तथा 'ख' में अर्थव्यवस्था या तो उपर्युक्त साधनों का भरपूर उपयोग करेगी या फिर उनका अधिक कुशलतापूर्वक प्रयोग करेगी। निष्कर्ष यह होगा कि बिंदु G पर अर्थव्यवस्था अपने उपलब्ध संसाधनों को सर्वोत्तम रूप में उपयोग नहीं कर पा रही थी।

(ग) वास्तव में, अर्थव्यवस्था दोनों वस्तुओं का उत्पादन अधिक कर सकती है, जैसे कि चित्र 13.2 में उत्पादक वक्र पर दिखाया गया बिंदु D, इस बिंदु की G बिंदु से तुलना की जा सकती है।

13.8 संसाधन वृद्धि

हमने पहले पढ़ा है कि लोगों की लगातार बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने के लिए संसाधनों में वृद्धि करना अनिवार्य है। यह वृद्धि तभी होगी, जब या तो संसाधनों की भौतिक मात्रा में

वृद्धि हो या फिर उनकी उत्पादकता के स्तर में सुधार हो। अत: संसाधन वृद्धि के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था के उत्पादन में भी वृद्धि होगी। 13.2 में दिए गए रेखाचित्र को हम उत्पादन क्षमता में वृद्धि दर्शाने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

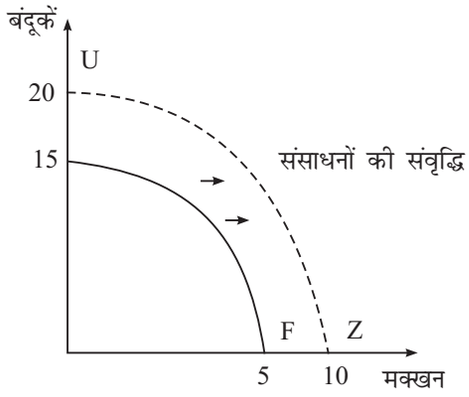

चित्र 13.3

चित्र संख्या 13.3 में AF, पूर्व के चित्र 13.1 की उत्पादन संभावना वक्र दिखाई गई है। UZ वक्र संसाधन संवृद्धि के कारण संभव हुआ है जो उच्चतर उत्पादन संभावना संयोजनों को दर्शा रहा है। इस नई स्थिति में अर्थव्यवस्था बंदूक तथा मक्खन दोनों ही वस्तुओं को अधिक मात्राओं में उत्पादन करने में समर्थ हो जाती है। बिंदु U पर अब 20 इकाइयों तक केवल बंदूक का उत्पादन बढ़ा सकती है तो बिंदु Z पर, जब बंदूक का उत्पादन शून्य है, मक्खन की 20 इकाइयां का उत्पादन है। वक्र UZ पर दर्शाए गए सभी बिंदुओं के संयोजन वक्र AE की अपेक्षा अधिक उत्पादन स्तरों को दर्शा रहे हैं। दूसरे शब्दों में, संसाधन वृद्धि PPC को बाहर की ओर खिसका देती है, अर्थात् दोनों वस्तुओं का पहले से अधिक उत्पादन संभव हो जाता है।

संसाधनों की संवृद्धि का स्पष्ट परिणाम यह होता है कि उत्पादन संभावना वक्र बाहर की ओर अधिकतम उत्पादन स्तर के साथ खिसक जाती है।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. सही उत्तर को चुनिए–

   उत्पादन संभावना वक्र पर कोई बिंदु दर्शाता है–

   (i) संसाधन वृद्धि

   (ii) संसाधनों का अकुशल उपयोग

   (iii) संसाधनों की बेरोजगारी

   (iv) संसाधनों का पूर्ण एवं कुशल उपयोग

2. बताइएं, क्या निम्न कथन सत्य हैं अथवा असत्य–

(i) उत्पादन संभावना वक्र के अंदर कोई बिंदु संसाधनों के अपूर्ण उपयोग को बताता है।

(ii) श्रम की बेरोजगारी का अर्थ है, संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं हो रहा है।

(iii) उत्तम प्रौद्योगिकी से उत्पादन संभावना वक्र अंदर की तरफ खिसक जाता है।

(iv) एक उत्पादन संभावना वक्र किसी अर्थव्यवस्था में दो से अधिक वस्तुओं के संयोजन दिखा सकता है।

(v) उत्पादन संभावना वक्र के सभी बिंदु समान रूप से कुशल हैं। इसीलिए अर्थव्यवस्था को इस वक्र पर किसी एक बिंदु का चयन करना होता है।

आपने क्या सीखा

- संसाधनों की दुर्लभता से चयन की समस्या उपन्न होती है।
- उत्पादक और उपभोक्ता दोनों को ही मूल आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है।
- आर्थिक समस्या अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं की जननी है। ये समस्याएं संसाधन आबंटन की समस्या कही जाती हैं।
- किस वस्तु को और कितनी मात्रा में उत्पन्न करें, ये विभिन्न वस्तुओं के उन संयोजनों की ओर ध्यान आकर्षित करती है, जिनका हमारी अर्थव्यवस्था, उपलब्ध संसाधनों द्वारा उत्पन्न करने में समर्थ है।
- 'कैसे उत्पादन करें' के अंतर्गत उत्पादन की श्रेष्ठतम तकनीक का चयन किया जाता है। ये तकनीक श्रम प्रधान या पूंजी प्रधान में से कोई एक हो सकती है।
- 'किसके लिए उत्पादन करें' में उत्पादन में सहायक बने कारकों के स्वामियों के बीच उत्पादन के वितरण पर विचार किया जाता है।
- उत्पादन संभावना वक्र वह वक्र है, जो दिए हुए संसाधनों तथा तकनीक के आधार पर दो वस्तुओं के उत्पादन की वैकल्पिक संभावनाओं को प्रकट करता है।
- उत्पादन संभावना वक्र पर कोई बिंदु दर्शाता है कि संसाधनों का पूर्ण तथा कुशल उपयोग हो रहा है।
- उत्पादन संभावना वक्र के अंदर का कोई भी बिंदु यह दर्शाता है कि संसाधनों का अल्प एवं अकुशलता से प्रयोग किया जा रहा है अथवा वे बेरोजगार हैं अथवा व्यर्थ पड़े हैं।
- संसाधन-वृद्धि को उत्पादन संभावना वक्र के बाहर की ओर खिसकाव द्वारा दिखाते हैं।

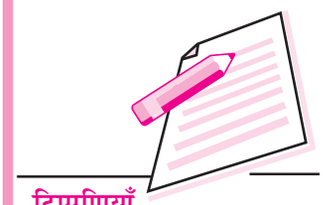

पाठांत अभ्यास

1. आर्थिक समस्याएं कैसे उत्पन्न होती हैं? यदि संसाधन असीमित होते तो क्या फिर भी आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होतीं?
2. समझाइए कि दुर्लभता किस प्रकार चयन की समस्या को जन्म देती है?
3. उपयुक्त उदाहरण देकर क्या और कितना उत्पादन करें की समस्या को समझाइए।
4. 'कैसे उत्पादन करें' की समस्या को समझाइए।
5. संसाधनों के पूर्ण प्रयोग की समस्या की व्याख्या करें।
6. अर्थव्यवस्था में संसाधनों की वृद्धि किस प्रकार हो सकती हैं?
7. उत्पादन संभावना वक्र क्या है? उत्पादन संभावना वक्र का प्रयोग कर संसाधनों के अकुशल प्रयोग की समस्या को समझाइए।
8. संसाधन वृद्धि को दिखाने वाली उत्पादन संभावना वक्र की रचना कीजिए। संसाधन वृद्धि अर्थव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित करती है?
9. क्या और किस प्रकार उत्पादन किया जाए कि समस्याओं की चर्चा कीजिए।
10. तालिका द्वारा एक नतोदर PPC को बनाइए।
11. PPC का प्रयोग करते हुए साधनों के अकुशल उपयोग की व्याख्या कीजिए।
12. PPC की सहायता से साधनों की वृद्धि को समझाइए।
13. PPC की सहायता से साधनों के कुशल उपयोग को समझाइए।
14. व्यष्टिगत और समष्टिगत अर्थशास्त्र प्रत्येक के तीन उदाहरण दीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1. सत्य	2. असत्य	3. असत्य	4. सत्य	5. असत्य
6. असत्य	7. सत्य	8. सत्य	9. असत्य	10. असत्य

टिप्पणियाँ

13.2

1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क)

13.3

1. अकुशलतापूर्वक 2. सुधार 3. पूर्णरूपेण उपयोग
4. बेरोजगार 5. अधिक श्रम की उपलब्धता

13.4

1. सत्य 2. सत्य 3. असत्य

13.5

1. (iv)
2. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य
(घ) असत्य (ङ) सत्य